DR Krishnadeo kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.j College Donwarihat
Khutuna, Madhubani
Email---Kdkbharti08@gmail.com
B.A Part--3 Date--16--07--2020
Mo.No---9234999361.

निर्णय-निर्माण प्रक्रिया से क्या समझते हैं? निर्णय-निर्माण के विभिन्न चरणों या सोपानों का विवेचना करें।*(What do you mean by Decision making process.Discuss its different steps.)*

निर्णय-निर्माण प्रक्रिया---

निर्णय-निर्माण प्रक्रिया किसी संगठन के उन तत्वों का वर्णन करती है जो सूचना निवेश स्वीकार और संसाधित करती है और उन्हें उपयोगी निष्कर्षों में परिवर्तित कर देती है।ये निष्कर्ष एक वांछनीय कार्य पथ के चयन में सहायक होते हैं जो जब क्रियान्वित हो जाऐगी तो प्रबन्धन की समस्या का समाधान प्रस्तुत करेगी।

निर्णय-निर्माण प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों का विवेचना निम्नलिखित है---

1. निर्णय की आवश्यकता को निश्चित करना----निर्णय निर्धारण प्रक्रिया का प्रारम्भ यह निश्चित हो जाने पर होता है कि कोई समस्या है अर्थात यह है कि एक असन्तोषजनक दशा बनीहुई हैं।यह ऐसी समस्या की पहचान करना है जिसके समाधान की आवश्यकता है। ऐसी समस्या इसलिए खड़ी होती है कि क्या है और क्या होना चाहिए मे अन्तर आ जाता है।क्या निर्णय अनिवार्य है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इस सम्बन्ध मे मैनेजर का क्या दृष्टिकोण है।जिसे कोई व्यक्ति समस्या समझता है वह दूसरे की दृष्टि में सन्तोषजनक स्थिति हो सकती है।अतएव निर्णय की समस्या तब खड़ी होती है जब कि मैनेजर यह स्वीकार कर लेता है कि जो कुछ वास्तविकता में है और जो वांछित है उसमे अन्तर है।क्या है और क्या होना चाहिए मे अन्तराल के कई कारण है।इन कारणों में परिस्थिति में परिवर्तन कार्यकुशलता या उत्पादकता मे कमी प्रतियोगिता में बृद्धि लाभ मे कमी या हानियों मे बृद्धि इत्यादि।

2. समास्या का निदान तथा समास्या को निश्चित करना----यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि समास्या को समुचित रूप से निश्चित की जाये।अनेक गलत निर्णय इसलिए हो जाते हैं क्योंकि जो व्यक्ति निर्णय ले रहा होता है उसे समास्या की अच्छी पकड़ नहीं होती।यह सदा सरल नहीं होता कि समास्या को परिभाषित किया जाये तथा उस मूल भूत बात का पता लगाया जाये जिससे कठिनाईयाँ खड़ी हो रही हैं और उसे ठीक करना आवश्यक है।जहाँ तक समास्याओं के आधारभूत कारणों का प्रश्न है ऐसे अनेक कारण हो सकते हैं।सही समास्या की व्याख्या के लिए जिन प्रश्नों पर सावधानी से ध्यान देना आवश्यक है, वे इस प्रकार है समस्या क्या है, किस समास्या का समाधान करना है, और यह कि समास्या का वास्तविक कारण क्या है।

विकल्पों को विकसित करना----जब एक बार समास्या को निश्चित कर दिया जाय और उसको वर्गीकृत कर दिया जाये, आंकड़े और पृष्ठभूमि सम्बन्धी सूचना एकत्रित कर दी जाये तब मैनेजर को ऐसे विकल्पों की सूची विकसित करनी होगी जो वर्णित समास्या का समाधान के लिए उपयुक्त है।समास्या पर पर्याप्त ध्यान केन्द्रीत की गारंटी। क्योंकि विभिन्न प्रकार के मतों की प्रस्तुति एक विभिन्न प्रकार का समाधान सामने लायेगा।केवल असहमति ही किसी निर्णय के विकल्पों को सामने लाएगी।असहमति संगठन में काम करने वाले लोगों की सृजनात्मक और नवनिर्माणत्मक क्रिया है।इसके लिए वैविध्यपूर्ण चिन्तन की आवश्यकता होती है।

4. विकल्पों का मूल्यांकन--जब एक बार सारे विकल्पों की गणना हो जाये, तब मैनेजर को उनमें से प्रत्येक का समीक्षात्मक मूल्यांकन करना चाहिए।मूल्यांकन किसी तरह की क्राइटेरिया या मानदण्ड के आधार पर किया जाता है।क्राइटेरिया के प्रत्येक तत्व के लिए उस महत्व को निर्धारित कर दिया जाना चाहिए।वास्तव में यह आत्मगत है क्योंकि इसमें एक मूल्यांकनकर्ता प्रत्येक क्राइटेरिया को दूसरे से भिन्न महत्व निर्धारित करेगा निर्णय लेने वाले को प्रत्येक विकल्प के लाभ तथा हानि को रेखांकित कर लेना चाहिए।साथ ही प्रत्येक विकल्प के परिणाम को ध्यान में रखना चाहिए।

5. सर्वोत्तम विकल्प का चयन करें----निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में यह सोपान उस समय आता है जब कि समस्त विकल्पों का गणना हो जाता है तथा निर्णय मानकों के अनुसार मूल्यांकन हो जाता है पीटर ड्राकर ने उपलब्ध विकल्पों में से सही विकल्प चुनने के लिए निम्नलिखित चार मानकों का उल्लेख किया है--

*1.*जोखिम या खतरा
*2.*प्रयास की मितव्ययिता
*3.*समय
*4.*संसाधनों को सीमित करना

आगे, धन्यवाद।

2020-07-16
From vivo Notes

Scanned with CamScanner